Acharya in Samveda

SVDV

Set No. 1 Question Booklet No.

16P/273/8

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No. | | | | | | | | | | |

Roll No. (Write the digits in words) ..... Code No (283) .....

Serial No. of OMR Answer Sheet ....

Day and Date ..... (2016) (Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only ***blue/black ball-point pen*** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall ***except the Admit Card without its envelope.***
3. ***A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.***
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. ***On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.***
6. ***No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.***
7. ***Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.***
8. ***Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.***
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR *Answer Sheet*** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages : 24 *[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]*

71

ROUGH WORK

रफ़ कार्य

16P/273/8

No. of Questions : 150

प्रश्नों की संख्या : 150

Time : 2 Hours ***Full Marks : 450***

समय : 2 घण्टे ***पूर्णाङ्क : 450***

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. ***One mark will be deducted for each incorrect answer***. **Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3** (तीन) अंक का है। *प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।* प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक *शून्य* होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. विश्वस्यादितमो ग्रन्थोऽस्ति :

(1) रामायणम् (2) महाभारतम् (3) वेदानांसंहिता (4) आयुर्वेद:

02. विश्वस्य धरोहरोऽस्ति :

(1) ऋग्वेद: (2) यजुर्वेद: (3) सामवेद: (4) अथर्ववेद:

03. सर्वप्रथमं वेदानामाविर्भावोऽभवत् :

(1) यूनानदेशे (2) भारतवर्षे (3) रूषदेशे (4) जर्मनदेशे

04. वेदानामुपदेशका आसन् :

(1) मुनय: (2) आचार्या: (3) ऋषय: (4) शंकराचार्या:

05. साक्षात्कृतधर्माण: आसन् :

(1) मुनय: (2) योगिन: (3) ऋषय: (4) आचार्या:

06. चतस्रृषु संहितासु विभक्तकार आसीत् :

(1) आदिशंकर: (2) जैमिनी: (3) वेदव्यास: (4) सायण:

07. ऋचा क्रियते :

(1) होतृकर्म (2) उद्गातृकर्म (3) आध्वर्यवकर्म (4) ब्रह्मकर्म

08. साम्ना क्रियते :

(1) होतृकर्म (2) उद्गातृकर्म (3) आध्वर्यवकर्म (4) ब्रह्मकर्म

09. यजुषा क्रियते :

(1) होतृकर्म (2) उद्गातृकर्म (3) आध्वर्यवकर्म (4) ब्रह्मकर्म

10. अथर्वणा क्रियते :

(1) होतृकर्म (2) उद्गातृकर्म (3) आध्वर्यवकर्म (4) ब्रह्मकर्म

11. आह्वाता भवति :

(1) होता (2) अध्वर्यु: (3) उद्गाता (4) ब्रह्म

12. जाते जाते विद्यां वदति :

(1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्यु: (4) ब्रह्मा

13. ग्रहकर्म करोति :

(1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्युः (4) ब्रह्मा

14. गायत्रं गायति :

(1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्युः (4) ब्रह्मा

15. नासाम विद्यते :

(1) अग्निहोत्रम् (2) दर्शयौर्णमासः (3) यज्ञः (4) दर्वीहोमः

16. कृत्तिकायामग्निन्यादधीत इतिवाक्त्रानुसारेण वेदस्य कालनिर्धारणंकृतम् :

(1) मैक्समूलरेन (2) यकोवीमहोदयेन

(3) तिलकमहोदयेन (4) स्वामीदयानन्देन

17. वेदाः नित्या इति मतिरस्ति :

(1) पाश्चात्यविदुषाम् (2) सनातनधर्मावलम्बिनाम्

(3) आधुनिकविदुषाम् (4) ऐतिह्यविदाम्

18. केनचित् व्यक्तिविशेषण लिखिताः सन्ति वेद इति मतिरासीत् :

(1) पाश्चात्यविदुषाम् (2) सनातनधर्मावलम्बिनाम्

(3) आधुनिकविदुषाम् (4) ऐतिह्यविदाम्

19. सर्वेषां वेदानां भाष्यकार आसीत् :

(1) दयानन्दस्वामी (2) सायणः (3) महीधरः (4) उवटः

20. वेदानां नयनमस्ति :

(1) व्याकरणम् (2) ज्योतिषम् (3)निरुक्तम् (4) छन्दः

21. छन्दोबद्धाः भवन्ति :

(1) ब्रह्मणानि (2) मन्त्राः (3) स्तुतयः (4) स्तोमाः

22. द्रव्यं देवतालाभः यागः लक्षणमिदंयज्ञस्यास्ति :

(1) निरुक्ते (2) ब्राह्मणे

(3) कात्यायनश्रोक्तसूत्रे (4) उपनिषदि

23. तृचं साम उच्येते इत्याभिप्रायोऽस्ति :

(1) तिसृणां ऋचां सांहारे वेदः

(2) ऋग्वेदस्य मान्त्रत्रयम्

(3) मन्त्रत्रयस्योच्चारणकालः

(4) मन्त्रत्रयस्योच्चारणसमकाले एकमन्त्रस्योचारणं गानंवासाम।

24. सामवेदस्य देवताऽस्ति :

(1) अग्निः (2) वायुः (3) सूर्यः (4) सोमः

25. सामवेदस्य प्रारम्भें छन्दः विद्यते :

(1) गायत्री (2) अनुष्टुप् (3) उष्णिक् (4) जगती

26. सोमयागे उद्गातार उपविशन्ति :

(1) हविर्धानमण्डपे (2) सदोमण्डपे (3) प्राग्वंशशालायाम् (4) वेद्याम्

27. विष्टुतिशदआर्थो भवति :

(1) विशिष्टस्तुति (2) पलाशशाखाया: प्रादेशमात्रं काष्टखण्डम्

(3) सामगानविशेष: (4) सामगानस्मावरोह:

28. उत्तरार्चिको विभागो भवति :

(1) ऋग्वेदस्य (2) यजुर्वेदस्य (3) सामवेदस्य (4) अथर्ववेदस्य

29. सामवेदस्य दिशा भवति :

(1) पूर्वा (2) दक्षिणा (3) पश्चिमा (4) उत्तरा

30. सामवेदस्य कालो भवति :

(1) प्रात:काल: (2) मध्याह्नकाल: (3) सायंकाल: (4) रात्रिकाल:

31. अग्न आ याहि इति मन्त्रे स्वरोऽस्ति :

(1) षड्ज: (2) ऋषभ: (3) मध्यम: (4) धैवत:

32. नमस्ते अगन ओजये इति मन्त्रे स्वर: विद्यते :

(1) धैवत: (2) ऋषभ: (3) मध्यम: (4) षड्ज:

33. यज्ञायज्ञा वो अग्नये इति मन्त्रे स्वर: विद्यते :

(1) षड्ज: (2) ऋषभ: (3) मध्यम: (4) धैवत:

34. देवो वो द्रविणोदा इति मन्त्रे स्वर: विद्यते :

(1) षड्ज: (2) ऋषभ: (3) मध्यम: (4) धैवत:

35. त्वमग्ने यज्ञानां होता इतिमन्त्रस्य छन्दः वर्तते :

(1) गायत्री (2) उष्णित् (3) त्रिष्टप् (4) जगती

36. प्रातः सवने गीयते :

(1) गायत्रीछन्दसि (2) अनुष्टुप्छन्दसि

(3) त्रिष्टुप्छन्दसि (4) जगतीछन्दसि

37. बहिष्यवमानस्तोत्रं गीयते :

(1) हर्विर्द्धानमण्डपे (2) सदोमण्डपे (3) धिष्णाग्नौ (4) उत्तरवेदेरुत्तरे

38. अग्न्युद्धरणसाम गीयते :

(1) गार्हपत्यस्योद्धरणकाले (2) आहवनीयोद्धरणकाले

(3) उत्तरवेद्यामुद्धरणकाले (4) आग्नीध्रोद्धरणकाले

39. "तं ते मदं गृणीमसि इति मन्त्रस्य स्वरः वर्तते :

(1) धैवतः (2) मध्यमः (3) ऋषभः (4) पञ्चमः

40. अपौरुषेयंवावयं वेदा इत्यत्रापौरुषेयस्यार्थो भवति

(1) पुरुषभिन्नम् (2) स्त्रीकर्तृकम् (3) नित्यम् (4) लौकिकम्

41. अज्ञातस्य ज्ञापकं वाक्यं भवति :

(1) अनुवादः (2) विधिः (3) अर्थवादः (4) अनुज्ञा

42. ज्ञातस्यज्ञापनं भवति :

(1) अनुवादः (2) विधिः (3) अर्थवादः (4) अनुज्ञा

43. विधेःनिन्दनं प्रशंसनं भवति :

(1) अनुवादः (2) विधिः (3) अर्थवादः (4) अनुज्ञा

44. स्वर्गस्य सिद्धौ हेतुर्भवति :

(1) अनुवादः (2) विधिः (3) अर्थवादः (4) अनुज्ञा

45. यागादिरेव धर्मः इति वाक्यमस्ति :

(1) दयानन्दस्वामिनः (2) सायणस्य

(3) लौगतक्षिभास्करस्य (4) कात्यायनस्य

46. सोमं राजानं वरुणम् इति मन्त्रे स्वरः वर्तते :

(1) ऋषभः (2) मध्यमः (3) गान्धारः (4) धैवतः

47. पुरुत्वा दाशिवा वोन्चे इति मन्त्रे स्वरःवर्तते :

(1) ऋषभः (2) धैवतः (3) मध्यमः (4) गान्धारः

48. प्रकृतिपदार्थनिवृतिः भवति :

(1) विधिवाक्येन (2) अर्थवादवाक्येन (3) निषेधवाक्येन (4) लोकवाक्येन

49. द्वादशस्त्रोत्राणि भवन्ति :

(1) अग्निष्टोमे (2) अत्याग्निष्टोमे (3) उक्थ्ये (4) वाजपेये

50. अदक्षिण: भवति :

(1) एकाह: (2) अहीन: (3) द्वादशरात्र: (4) सत्रम्

51. त्रिवृत्स्तोमस्य देवता भवति :

(1) अग्नि: (2) वायु: (3) इन्द्र: (4) प्रजापति:

52. अग्निदैवतं छन्द: भवति :

(1) गायत्री (2) अनुष्टुप् (3) त्रिष्टुप् (4) जगती

53. द्वादशसंख्यका देवता: भवन्ति :

(1) वसव: (2) रुद्रा: (3) आदित्या: (4) विश्वेदेवा:

54. प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमेऽर्धे दशतिर्संख्या: भवन्ति :

(1) पञ्च (2) सप्त (3) दश: (4) द्वादश:

55. आग्नेयकाण्डमिति संज्ञा अस्ति :

(1) ऋग्वेदस्य प्रथमकाण्डस्य (2) यजुर्वेद प्रथमाध्यायस्य

(3) सामवेदस्य प्रथमाध्यायस्य (4) अथर्ववेदस्य प्रथमाध्यसायस्य

56. प्रथमप्रपाठके अर्धस्यसंख्या: सन्ति :

(1) 2 (2) 3 (3) 4 (4) 5

57. उतस्या नो दिवा इति मन्त्रस्य देवता वर्तते :

(1) अग्नि: (2) इन्द्र: (3) पवमान: (4) सोम:

58. ऐन्द्रं काण्डमितिसंज्ञा वर्तते :

(1) प्रथमाध्यायस्य (2) द्वितीयाध्यायस्य (3) तृतीयाध्यायस्य (4) चतुर्थाध्यायस्य

59. द्वितीयाप्रपाठकेप्रथमेऽर्धे दशति संख्या: सन्ति :

(1) 2 (2) 3 (3) 5 (4) 6

60. पात्तमावो अन्धस इति मन्त्रस्य छन्द: वर्तते :

(1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) अनुष्ट्गायत्री (4) त्रिष्टुप्

61. चित्रं देवानामुदगादनीकम् मन्त्रस्य देवता अस्ति :

(1) अग्नि: (2) इन्द्र: (3) सूर्य: (4) वायु:

62. अग्न आयुषि पवस: इतिमन्त्रस्य देवता अस्ति :

(1) अग्नि: (2) इन्द्र: (3) आदित्य: (4) पर्च्यन्य:

63. तरणिर्विश्वदर्शतो इति मन्त्रस्य छन्द: वर्तते :

(1) गायत्री (2) उष्णिहक् (3) त्रिष्टुप् (4) जगती

64. सहस्त्रवर्त्मा वर्तते :

(1) ऋग्वेद: (2) यजुर्वेद: (3) सामवेद: (4) अथर्ववेद:

65. जैमिनीशाखावर्तते :

(1) ऋग्वेदस्य (2) यजुर्वेदस्य (3) सामवेदस्य (4) अथर्ववेदस्य

66. अङ्गुलिभिः स्वस्य प्रदर्शनं भवति :

(1) ऋग्वेदस्य (2) यजुर्वेदस्य (3) सामवेदस्य (4) अथर्ववेदस्य

67. सुब्रह्मण्यस्याहवाहनं करोति :

(1) उद्गाता (2) प्रतिहर्ता (3) उन्नेष्टा (4) सुब्रह्मम्

68. स्तोत्रगायनकाले अध्वर्युहस्तात् कुशमुष्टि ग्रहणं करोति :

(1) उद्गाता (2) प्रतिहर्ता (3) उन्नेष्टा (4) सुब्रह्मण्य

69. अवभृधकाले सामगानं करोति :

(1) होता (2) उद्गाता (3) अध्वर्युः (4) ब्रह्मा

70. लास्यायनश्रौतसूत्रमस्ति :

(1) ऋग्वेदस्य (2) सामवेदस्य (3) यजुर्वेदस्य (4) अथर्ववेदस्य

71. साम्प्रतं सामवेदस्योपलब्धशाखाः सन्ति :

(1) तिस्त्रः (2) पञ्च (3) षट् (4) द्वादशः

72. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय इति मन्त्रस्य छन्दः वर्तते :

(1) गायत्री (2) बार्हतप्रगाथ (3) काकुमःप्रागाथः (4) अनुष्टय्ः प्रगाथः

73. पूर्वार्चिके अध्यायाः सन्ति :

(1) पञ्च (2) षट् (3) सप्त (4) नव

74. आरण्यगानस्य मन्त्राः सन्ति :

(1) आग्नेयकाण्डे (2) पवमानकाण्डे (3) आरण्यकाण्डे (4) ऐन्द्रकाण्डे

75. तद्वो गाय सूते सचा इति मन्त्रः वर्तते :

(1) आग्नेयकाण्डे (2) पवमानकाण्डे (3) आरण्यकाण्डे (4) ऐन्द्रकाण्डे

76. त्वामग्ने पुष्करादक्षर्वा निरमन्यत इति मन्त्राः वर्तते :

(1) आग्नेयकाण्डे (2) पवमानकाण्डे (3) आरण्यकाण्डे (4) ऐन्द्रकाण्डे

77. अभित्वाशूर नोनुम इति मन्त्रः वर्तते :

(1) पूर्वा. प्रथमेऽध्याये (2) द्वितीयेऽध्याये

(3) तृतीयेऽध्याये (4) पञ्चमेऽध्याये

78. अग्नि वो वृधन्त्रमध्वराणाम् इति मन्त्रः वर्तते :

(1) पूर्वा. प्रथमेऽध्याये (2) द्वितीयेऽध्याये

(3) तृतीयेऽध्याये (4) चतुर्थेऽध्याये

79. भिन्धि विश्वा अप इति मन्त्रः वर्तते :

(1) आग्नेयकाण्डे (2) ऐन्द्रकाण्डे (3) पवमानकाण्डे (4) आरण्यकाण्डे

80. उत्तरार्चिके अध्यायाःसन्ति :

(1) दशः (2) पञ्च (3) पञ्चदशः (4) एकविंशः

81. उपास्मै गायता नरः इति मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते :

(1) मरीचः (2) भरद्वाजः

(3) असितः कश्यपो देवलः (4) वैरवानसः

82. अग्ना आयाहि वीयते इति मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते :

(1) मरीचः (2) भरद्वाजः (3) देवलः (4) वैरवानसः

83. इदं हचन्वोजसा इति मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते :

(1) भरद्वाजः (2) असितः (3) विश्वामित्रः (4) मधुच्छन्दा

84. योगे योगे त्वस्तरे इति मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते :

(1) कण्वः (2) त्रिशोकः (3) मेधातिथिः (4) शुनःशेप

85. पवस्य वाचो इति मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते :

(1) अमहीयुः (2) कश्यपः (3) जमदग्नि : (4) भरद्वाजः

86. वृषा सोमः इति मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते :

(1) जमदग्निः (2) कश्यपः (3) भरद्वाजः (4) अमहीयुः

87. अभिप्रवः सुराधसम् इति मन्त्रस्य देवता वर्तते :

(1) अग्निः (2) इन्द्रः (3) आदित्यः (4) वसवः

88. तं त्वा शोचिष्ठ दीदिव इति मन्त्रस्य देवता वर्तते :

(1) अग्निः (2) इन्द्रः (3) आदित्यः (4) विश्वदेवाः

89. पवस्य वाचो अग्नियः इति मन्त्रस्य देवता वर्तते :

(1) अग्निः (2) वायुः (3) आदित्यः (4) पवमानसोमः

90. अस्य प्रत्नामनु घुतम् इति मन्त्रस्य देवता वर्तते :

(1) अग्नि: (2) वायु: (3) आदित्य: (4) पवमानसोम:

91. इहत्वा गोपरीणसम् इति मन्त्रस्य देवता वर्तते :

(1) अग्नि: (2) वायु: (3) इन्द्र: (4) सोम:

92. गृणे तदिन्द्रतेशव इति मन्त्रस्य छन्दोऽस्ति :

(1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) त्रिष्टुप् (4) जगती

93. अभ्रातृव्यो अना त्वम् इति मन्त्रस्य छन्दोऽस्ति :

(1) गायत्री (2) ककुबुष्णिक (3) त्रिष्टुप् (4) जगती

94. सत्यमित्था वृषेदसि इति मन्त्रस्य छन्दोऽस्ति :

(1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) बृहंती (4) जगती

95. आर्चक्रदद् वृषाहरि: इति मन्त्रस्य छन्दोऽस्ति :

(1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) त्रिष्टुप् (4) बृहती

96. इन्द्र नो गधि प्रिय इति मन्त्रस्य छन्दोऽस्ति :

(1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) त्रिष्टुप् (4) बृहती

97. उभयं ऋणवच्च न इन्द्रो इति मन्त्रस्य छन्दोऽस्ति :

(1) गायत्री (2) उष्णिक् (3) त्रिष्टुप् (4) बृहती

98. पवस्यव इति शब्दस्यार्थो भवति :

(1) पवित्रं कुरु (2) रक्षणं कुरु (3) गृहाण (4) पश्यतु

99. पवमान शब्दस्यार्थो भवति :

(1) अग्नि: (2) वायु: (3) आदित्याग्नि: (4) गृहाग्नि:

100. विश्वाभि: शब्दस्यार्थो भवति

(1) विश्वम् (2) सर्वाभि: (3) विश्वस्य रुपै: (4) लोकेभि:

101. वृषभ शब्दस्यार्थो भवति :

(1) वषर्णशील: (2) बलिवर्द: (3) गौ: (4) तत्सदृश: पशु:

102. नेदिष्टम् शब्दस्यार्थो भवति :

(1) नप्तृ: (2) समीपतम: (3) नइवटम् (4) सर्वेषामिष्टम्

103. शुक्र: शब्दस्यार्थो भवति :

(1) शुक्रग्रह: (2) शुक्रवासर: (3) शुद्ध: (4) पवित्रम्

104. पियूष: शब्दस्यार्थो भवति :

(1) अमृतम् (2) दुग्धम् (3) दधि (4) घृतम्

105. पवन्त: शब्दस्यार्थो भवति :

(1) आवपन्त: (2) दिक्षु विकीरणम्

(3) पवित्रं कुवन्त: (4) पश्यन्त:

106. शुचिः शब्दस्यार्थो भवति :

(1) पवित्रः (2) पार्थिवाग्निः (3) अन्तरिक्षाग्निः (4) युलोकाग्नि

107. मृग शब्दस्यार्थो भवति :

(1) हरिणः (2) पशुः (3) सिंहः (4) गवयः

108. निरपेक्षः शब्दो भवति :

(1) वायुः (2) अग्निः (3) श्रुतिः (4) कर्णः

109. श्रुतेः विभागो भवति :

(1) द्विधा (2) त्रिधा (3) चतुर्धा (4) पञ्चधा

110. वस्तुसामर्थ्यं भवति :

(1) विधिः (2) अर्थवादः (3) लिङ्गम् (4) निषेधः

111. पदसमभिव्यवहारो भवति :

(1) लिङ्गम् (2) वाक्यम् (3) अर्थवादः (4) विधिः

112. इतिकर्त्तव्यताकाङ्क्षा भवति :

(1) वाक्यम् (2) प्रकरणम् (3) पदम् (4) कर्म

113. देशसामान्यं भवति :

(1) वाक्यम् (2) प्रकरणम् (3) स्थानम् (4) कर्म

114. यौगिकी संज्ञा भवति :

(1) वाक्यम् (2) प्रकरणम् (3) समाख्या (4) भावना

115. गृहपतिशब्दस्यार्थो भवति :

(1) गृहस्य पतिः (2) स्त्रीणां पतिः

(3) यस्यगृहे सत्रयागो भवति स गृहपतिः (4) सर्वेषां पतिः

116. मन्त्रोहस्तु भवति :

(1) पञ्चविधः (2) सप्तविधः (3) अष्टविधः (4) नवविधः

117. गिरापदगतगीतिक्रियाया इरापदे अहः कथ्यते :

(1) मन्त्रोहः (2) सामोहः (3) ऋबोहः (4) अथर्वोहः

118. चतुर्भि ऋत्विग्भिः सम्यद्यमष्ना भवति :

(1) यज्ञः (2) सोमयागः (3) दृष्टिः (4) होमः

119. षोडशभिः ऋत्विग्भिः सम्यद्यमानो भवति :

(1) यज्ञः (2) सोमायात्र (3) चातुर्मास्यम् (4) पशुबन्धः

120. सप्तदश ऋत्विक भवति

(1) होता (2) अध्वर्युः (3) उद्गाता (4) यजमानः

121. सप्तदशे ऋत्विजे एव ग्रहणंभवति :

(1) यजमानस्य (2) पत्न्याः (3) सदस्यस्य (4) सोमप्रवाकस्य

122. जातपुत्रः कृष्णकेशोऽग्निमादधीत इत्याधिकारवाक्यमस्ति :

(1) श्रौतयज्ञस्य (2) स्मार्तयज्ञस्य (3) सोमयागस्य (4) हवियगिस्य

123. आवसथ्याधानं दारकाले दयाद्यकाले एकेषमित्य धिकारवाक्यमस्ति :

(1) श्रौतयज्ञस्य (2) स्मार्तयज्ञस्य (3) दर्वीयज्ञस्य (4) पाकयज्ञस्य

124. उद्गीयरसावलम्बो वाताध्यूढः कथ्यते :

(1) ऋक् (2) यजुः (3) साम (4) अथर्वः

125. मा प्रमा प्रतिमा प्रभुतिच्छन्दोभि छन्दिता उच्यते :

(1) वाक् (2) प्राणः (3) मनः (4) उक्थम्

126. साम्नः भक्तयः भवन्ति :

(1) चत्वारः (2) पञ्च (3) षष्ठ (4) सप्त

127. उद्गामनिग्रामयोर्व्यवच्छेदकं मध्यमं पदमुच्यते :

(1) हिंकारः (2) प्रस्ताव (3) उद्गीथ (4) निधनम्

128. निरुढसाम्नां भेदा भवन्ति :

(1) 10 (2) 12 (3) 15 (4) 7

129. रथन्तरसाम्नः रूपाणि भवन्ति :

(1) त्रीणि (2) चत्वारि (3) पञ्च (4) सप्त

130. बृहत् बैराज-रैवतमिति त्रीणि रूपाणि भवन्ति :

(1) रथन्तरस्य (2) वृहत: (3) शाक्वरस्य (4) वामदेवस्य

131. वारवन्तीयं श्रामवन्तीयं यज्ञायज्ञीयमिति त्रीणि रूपाणि भवन्ति :

(1) रैवतसाम्न: (2) शाक्वरसाम्न: (3) वैराजसाम्न: (4) प्राजापत्यसाम्न:

132. रथस्य घोषवत् भवति :

(1) वैराजसाम (2) रथन्तरसाम (3) वैरुपसाम (4) यज्ञायज्ञीयसाम

133. गवांघोषवत् भवति :

(1) रेवतीसाम (2) शक्वरसाम (3) वैराजसाम (4) वैरूपसाम

134. ज्योतिष्टोमे ज्योतिर्षि भवन्ति :

(1) 2 (2) 3 (3) 4 (4) 5

135. प्राणमयंसाम भवति :

(1) गायत्रम् (2) वारवन्तीयम् (3) बृहद्रथम् (4) वैराजम्

136. ईश्वरस्य विराडात्मन: प्रजापते स्वरूपं भवति :

(1) बृहत्साम (2) वामदेव्यसाम (3) सर्वसाम (4) निगूढसाम

137. अग्निष्टोमे निमूढानि सामानि उच्यन्ते :

(1) परम् (2) मध्यमम् (3) नीचतमम् (4) उच्चतमम्

138. सत्रस्य ऋद्धिरसि इतिसाम्नः नाम अस्ति :

(1) वैराजसाम (2) वैश्वानससाम

(3) आग्नीध्रीयाग्निसाम (4) वैहतव्यसाम

139. रथन्तरे गुणीभूतं वृहत्साम उच्चयते :

(1) गौरीवितम् (2) निदृवसाम (3) नौधसम् (4) आर्षम्

140. शत्रुबहिष्करार्यं गीयते :

(1) हविर्धानसाम (2) श्यावाश्वम् (3) परमसाम (4) कालेयंसाम

141. वैश्वराग्नेये गीयते :

(1) वारवन्तीयम् (2) ओकोनिधनम् (3) त्रैककुभम् (4) सौवश्रसम्

142. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा शरद्धेमन्त इत्यच्यन्ते. :

(1) प्राणसाम (2) प्रजापतिसाम (3) पञ्चभक्तिकंसाम (4) लौकिकंसाम

143. यत्किञ्च वाचो हुमिति करोति स उच्यते :

(1) निधनम् (2) उद्गीथः (3) हिंकारः (4) प्रस्तावः

144. यत्किञ्चिदुदेदिति स उच्यते :

(1) उपद्रवः (2) उद्गीथः (3) प्रस्तावः (4) उपद्रवः

145. ब्रह्मसामानि भवन्ति :

(1) पञ्च (2) षट् (3) सप्त (4) नव

146. अच्युतसामानि भवन्ति :

(1) द्वे (2) त्रीणि (3) चत्वारि (4) पञ्च

147. पशवो वै बृहद्रथन्तरे इति वाक्यमस्ति :

(1) शतपथस्य (2) ताण्डयमहाब्राह्मणस्य

(3) जैमिनीब्राह्मणस्य (4) ऐतरेयब्राह्मणस्य

148. उद्गीथनिधनयोर्मध्ये भवति :

(1) प्रस्ताव: (2) हिंकार: (3) स्वरभक्ति: (4) प्रतीहार:

149. ऋचां समं मेने इति मतिरस्ति :

(1) व्याकरणस्य (2) प्रतिशाख्य (3) शिक्षाया: (4) निरुक्तस्य

150. ऋकसामे अन्योन्यमविभाभूते भवत: इति कथनस्ति :

(1) मधुसूदन ओझा महोदयस्य (2) सायणस्य

(3) उवटस्य (4) महीधरस्य

ROUGH WORK

रफ़ कार्य

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में ***लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त,*** लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. ***उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।***
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. ***उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।***
6. ***ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।***
7. ***उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।***
8. ***प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।***
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ***ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।***
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त *केवल* ***ओ एम आर उत्तर-पत्र*** परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।